वतन बिसारिया रे

वतन बिसारिया रे, छलें किए हैरान।
धनी आप बुध भूलियां, सुध न रही वृद्धि हान।।

ब्रह्मसृष्ट सखियां धाम की, आइयां छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियां, खेलें भुलाए दिया वतन।।

धाम से रब्द करके, हम कब आवें दूजी बेर।
सब भूले सुध हार जीत की, तो में कहया फेर फेर।।

देख के अवसर भूलहीं, बहोरि न आवे ए अवसर।
जानत हैं आग लगसी, तो भी छूटे ना छल क्योंए कर।।

पीछे पछतावा क्या करे, जब गया समया चल।
ऐसे क्यों भूलें अंकूरी, जाके सांचे घर नेहेचल।।

महामत कहे जो होवे धाम की, सो पेहेचान के लीजो लाहा।
ले सको सो लीजियो, फेर ऐसा न आवे समया।।